Nasihaton Ke Madani Phool (Hindi)

नसीहतों पर मुश्तमिल ''अह़ादीसे क़ुदसिय्या'' का एक मुख़्तसर मज्मूआ़

اَلْمَوَاعِظُ فِي الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة

तरजमा बनाम

नसीह़तों के म-दनी फूल

ब वसीलए अह़ादीसे रसूल

मुअल्लिफ़ : ह़ुज्जतुल इस्लाम इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الوَالِي

अल मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

क़िताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले जै़ल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

क़िताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

क़िताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला ''اَلْمَوَاعِظُ فِی الْاَحَادِیْثِ الْقُدْسِیَّۃ''

हुज्जतुल इस्लाम इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने अ़-रबी ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है । मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने इस का **उर्दू** तरजमा और तख़्रीज कर के **''नसीह़तों के म-दनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल''** के नाम से पेश किया है । मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

✍ **राबित़ा : मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

www.dawateislami.net

नसीह़तों पर मुश्तमिल ''अह़ादीसे क़ुदसिय्या'' का
एक मुख़्तसर मज्मूआ़

اَلْمَوَاعِظُ فِي الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّةِ

तरजमा बनाम

नसीह़तों के म-दनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल

मुअल्लिफ़

ह़ुज्जतुल इस्लाम इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي

अल मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.

मुतर्जिमीन : म-दनी उ़-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

नाम किताब : اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِیْثِ الْقُدْسِیَّة

तरजमा बनाम : **नसीहतों के म-दनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल**

मुसन्निफ़ : **हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی

मु-तर्जिमीन : **म-दनी उ़-लमा** (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने त़बाअ़त : **सितम्बर 2017**

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 26 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1430 हि. ह़वाला नम्बर : 164

الحمد للّٰہ رب العلمین والصلٰوۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلٰی الہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि रिसाला ''اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِیْثِ الْقُدْسِیَّة'' के तरजमा

''नसीहतों के म-दनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल''

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

18-08-2009

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

मज़्मून	सफ़हा	मज़्मून	सफ़हा
पहले इसे पढ़ लीजिये	5	नसीहत नम्बर 14 : हर चीज़ फ़ानी है	19
ख़ुत्बए किताब	7	नसीहत नम्बर 15 : सब से बेहतरीन तोशा	20
नसीहत नम्बर 1 : ऐ इब्ने आदम !	7	नसीहत नम्बर 16 : इब्ने आदम की मिसाल	20
नसीहत नम्बर 2 : इल्म पर अमल की ब-र-कत	8	नसीहत नम्बर 17 : ज़ाहिर हसीन, बातिन ख़राब	22
नसीहत नम्बर 3 : तारिके ग़ीबत के लिये महब्बते इलाही	10	नसीहत नम्बर 18 : इब्ने आदम पर करम नवाज़ियां	23
नसीहत नम्बर 4 : बेहतरीन आक़ा और बद तरीन बन्दा	11	नसीहत नम्बर 19 : नेकियां अपनाओ और ब-र-कतें पाओ	24
नसीहत नम्बर 5 : क़ब्र की पुकार	12	नसीहत नम्बर 20 : बे मिसाल ख़ूबियां	25
नसीहत नम्बर 6 : इन्सान की पैदाइश का मक़्सद	13	नसीहत नम्बर 21 : ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ न रहना	26
नसीहत नम्बर 7 : दिरहमो दीनार के ग़ुलाम	13	नसीहत नम्बर 22 : क़ियामत की दहशतें	28
नसीहत नम्बर 8 : तक्लीफ़ उठाए बिग़ैर मक़ाम नहीं मिलता	14	नसीहत नम्बर 23 : ज़बान को आज़ाद न छोड़ो	29
नसीहत नम्बर 9 : मख़्लूक़ पर ला'नत न करो	15	नसीहत नम्बर 24 : रोज़े और क़ियाम का इन्आम	30
नसीहत नम्बर 10 : ईमान वालों के आ'माल	15	नसीहत नम्बर 25 : दुश्मने ख़ुदा से ग़फ़्लत क्यूं ?	32
नसीहत नम्बर 11 : तालिबे दुन्या की हैसिय्यत	16	नसीहत नम्बर 26 : मेरे हो जाओ मैं तुम्हारा हो जाऊंगा	34
नसीहत नम्बर 12 : उ-लमा की सोहबत इख़्तियार करो	17		
नसीहत नम्बर 13 : तबाही व बरबादी के अस्बाब	18		

www.dawateislami.net

नसीह़त नम्बर 27 : जहन्नम के अ़ज़ाबात	34	नसीह़त नम्बर 33 : पड़ोसी के ह़क़ की रिआ़यत कर	43
नसीह़त नम्बर 28 : जन्नत के इन्आ़मात	36	नसीह़त नम्बर 34 : अगर तेरे गुनाह ज़ाहिर हो गए तो	45
नसीह़त नम्बर 29 : तेरा और मेरा हिस्सा	38	नसीह़त नम्बर 35 : मसाकीन पर ख़र्च न करने का सबब	46
नसीह़त नम्बर 30 : अह़मक़ को नसीह़त की मिसाल	39	नसीह़त नम्बर 36 : दुश्मने औलिया से ए'लाने जंग	48
नसीह़त नम्बर 31 : अ़ज़ीमुश्शान बिशारतें	40	नसीह़त नम्बर 37 : तौबा में टाल मटोल नदामत लाती है	48
नसीह़त नम्बर 32 : सब से बड़ी मौत	41	नसीह़त नम्बर 38 : क़ब्र का रफ़ीक़	51

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : اَلسِّوَاکُ مَطْهَرَةٌ لِّلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِّلرَّبِّ ''या'नी ''मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुश्नूदी का सबब है।''

(سنن ابن ماجه،ابواب الطَّهَارَةِ وَسُنَنِهَا،بَاب السِّوَاك،الحديث:٢٨٩،ص٢٤٩٥)

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

अल्लाहु रब्बुल आ-लमीन عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۱﴾ (پ۲۰، القصص:۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने इन के लिये बात मुसल्सल उतारी कि वोह ध्यान करें।

ह़ज़रते सय्यिदुना सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى (मु-तवफ़्फ़ा 1367 हि.) इस के तह़्त **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में फ़रमाते हैं : "कुरआने करीम इन के पास पयापै (या'नी पै दर पै) और मुसल्सल आया, वा'द और वईद और क़सस और इ़ब्रतें और मौइ़-ज़तें (नसीह़तें) ताकि समझें और ईमान लाएं।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ ने जिस त़रह़ कुरआने ह़कीम में अपने बन्दों को नसीह़तें फ़रमाई हैं, इसी त़रह़ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़ तरजुमान से "**अह़ादीसे कुदसिय्या**" में भी नसीह़तें फ़रमाई हैं।

जिस ह़दीस शरीफ़ को हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रब तआ़ला की निस्बत से अपने अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया उसे **ह़दीसे कुदसी** कहते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 180 मुलख़्ख़सन)

ज़ेरे नज़र रिसाला "**नसीह़तों के म-दनी फूल, ब वसीलए अह़ादीसे रसूल**", अबू ह़ामिद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम

www.dawateislami.net

मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की तस्नीफ़ ''اَلْمَوَاعِظ فِى الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة'' (دارُ الفکر بیروت،مطبوعه:۱٤۲٤ھ/۲۰۰۳ء) का उर्दू तरजमा है। जो त़वील और मुख़्तसर **38 ''अह़ादीसे क़ुदसिय्या''** पर मुश्तमिल है।

इस तरजमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़ह्मी का दख़्ल है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

(اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم)

शो'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

ख़ुत्बए किताब

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ تَذْكِرَةٌ لِّلْعِبَادِ، تَقْوِيَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ اِلَى الْعِبَادَةِ، وَالصَّلٰوةُ عَلٰى صَاحِبِ الْمِلَّةِ الطَّاهِرَةِ، وَالرِّضْوَانُ عَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَهْلِهِمْ، وَعَلٰى مَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ وَّعُلَمَاءِ الْاُمَّةِ فِىْ كُلِّ زَمَان.

तरजमा : सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं कि इस की ता'रीफ़ करना तमाम बन्दों का वज़ीफ़ा, मुत्तक़ी मुसल्मानों की इबादत की त़रफ़ हिम्मत अफ़्ज़ाई है। और दुरूद नाज़िल हो पाक मिल्लत (या'नी दीन) वाले हमारे आक़ा व मौला ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर, और इन की आल, अस्ह़ाब और अस्ह़ाब की आल और भलाई के साथ इन की इत्तिबाअ़ करने वालों और हर ज़माने में उ-लमाए उम्मत पर रिज़ाए इलाही का नुज़ूल हो।

इस रिसाले ''اَلْمَوَاعِظ فِى الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة'' में नफ़्अ़ मन्द भलाई है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस के ज़रीए नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन)

नसीह़त नम्बर 1 : ऐ इब्ने आदम !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''**ऐ इब्ने आदम !** तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत पर यक़ीन रखता है फिर भी ख़ुश होता है।

۞..... तअ़ज्जुब है उस पर जो ह़िसाबो किताब पर यक़ीन रखता है फिर भी माल जम्अ़ करने में मसरूफ़ है।

۞..... तअ़ज्जुब है उस पर जो क़ब्र पर यक़ीन रखने के बा वुजूद हंसता है।

۞..... तअ़ज्जुब है उस पर जिसे आख़िरत पर यक़ीन है

www.dawateislami.net

फिर भी पुर सुकून है।

۞..... तअ़ज्जुब है उस पर जो दुन्या (की ह़क़ीक़त को जानता) और इस के ज़वाल पर यक़ीन रखता है फिर भी इस पर मुत्मइन है।

۞..... तअ़ज्जुब है उस पर जो गुफ़्त-गू तो आ़लिमों जैसी करता है लेकिन उस का दिल जाहिलों जैसा है।

۞..... तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो पानी के ज़रीए (ज़ाहिरी आ'ज़ा की) पाकी तो ह़ासिल करता है मगर उस का दिल (गुनाहों की गन्दगी) से आलूदा है।

۞..... तअ़ज्जुब है उस पर जो लोगों के उ़यूब तलाश करने में तो मसरूफ़ रहता है लेकिन अपने उ़यूब से ग़ाफ़िल है।

۞..... तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो जानता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे हर अ़मल से बा ख़बर है फिर भी उस की ना फ़रमानी करता है।

۞..... तअ़ज्जुब है उस पर जो जानता है कि इसे अकेले मरना, अकेले क़ब्र में दाख़िल होना और अकेले ही ह़िसाब देना है फिर भी लोगों से उन्सिय्यत रखता है।

(**ऐ इब्ने आदम !** सुन !) मैं ही मा'बूदे ह़क़ीक़ी हूं और मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरे ख़ास बन्दे और रसूल हैं।"

۞۞۞۞۞۞۞

नसीह़त नम्बर 2 : इ़ल्म पर अ़मल की ब-र-कत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं गवाह हूं कि सिर्फ़ मैं ही मा'बूदे बरह़क़ हूं, मेरा कोई शरीक नहीं और मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरे ख़ास बन्दे और रसूल हैं।

www.dawateislami.net

۞..... जिस ने न तो मेरे फ़ैसले को क़बूल किया, न मेरी आज़्माइश पर सब्र किया, न मेरी ने'मतों का शुक्र अदा किया और न ही मेरी बख़्शिश (या'नी अ़ता कर्दा ने'मत) पर क़नाअ़त की तो उसे चाहिये कि वोह मेरे इ़लावा किसी और रब की इ़बादत करे।

۞..... जिस ने इस ह़ालत में सुब्ह़ की, कि वोह दुन्या पर ग़मज़दा था तो गोया उस ने मुझ से नाराज़ी की ह़ालत में सुब्ह़ की।

۞..... जिस ने किसी मुसीबत पर शिक्वा व शिकायत की, तह़क़ीक़ उस ने मेरी शिकायत की।

۞..... जिस ने मालदारी की वज्ह से किसी मालदार के सामने आ़जिज़ी का इज़्हार किया तो उस का दो तिहाई दीन चला गया (या'नी कमज़ोर हो गया)।

۞..... जिस ने मय्यित पर अपना चेहरा पीटा और चीख़ो पुकार की गोया उस ने नेज़े के ज़रीए़ मेरे साथ जंग की।

۞..... जिस ने किसी क़ब्र पर लकड़ी तोड़ी गोया उस ने अपने हाथ से मेरे का'बे के दरवाज़े को गिराया।

۞..... जिस ने इस बात की परवा न की, कि किस दरवाज़े से खाता है (या'नी ह़लाल व ह़राम की परवा न की) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कोई परवा नहीं कि वोह उसे किस दरवाज़े से जहन्नम में दाख़िल फ़रमाए।

۞..... जिस ने अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा न किया वोह नुक़्सान में है, और जो ख़सारे में हो उस के लिये मौत ही बेहतर है।

۞..... जिस ने अपने इ़ल्म पर अ़मल किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस चीज़ का इ़ल्म भी अ़ता फ़रमा देता है जो वोह नहीं जानता।

www.dawateislami.net

۞..... जिस ने लम्बी उम्मीद बांधी उस का अ़मल इख़्लास पर मब्नी नहीं हो सकता।''

۞۞۞۞۞۞۞

नसीहत नम्बर 3 : तारिके ग़ीबत के लिये महब्बते इलाही

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !** क़नाअ़त इख़्तियार कर मुस्तग़नी हो जाएगा। ह़सद छोड़ दे इस्तिराह़त पा जाएगा। ह़राम से बच दीन में मुख़्लिस हो जाएगा।

۞..... जिस ने ग़ीबत को तर्क कर दिया उस के लिये मेरी महब्बत ज़ाहिर हो गई।

۞..... जिस ने लोगों से कनारा कशी इख़्तियार की वोह लोगों से महफ़ूज़ हो गया।

۞..... जिस की गुफ़्त-गू ह़स्बे ज़रूरत हो उस की अ़क़्ल कामिल हो गई।

۞..... जिस ने कम पर क़नाअ़त की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया।

ऐ इब्ने आदम ! तू जो जानता है उस पर तो अ़मल करता नहीं तो मज़ीद की त़लब क्यूं करता है ?

ऐ इब्ने आदम ! तू दुन्या में ऐसे मसरूफ़ है गोया तू ने मरना ही नहीं और माल ऐसे जम्अ़ कर रहा है गोया तू (दुन्या में) हमेशा रहेगा।

ऐ दुन्या ! अपने ह़रीस को महरूम कर दे, अपने तारिक (या'नी छोड़ने वाले) को तलाश कर और देखने वालों की निगाह में शीरीं हो जा।''

۞۞۞۞۞۞۞

www.dawateislami.net

नसीहत नम्बर 4 : बेहतरीन आक़ा और बद तरीन बन्दा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** जिस ने दुन्या पर ग़मज़दा होने की ह़ालत में सुब्ह़ की वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (की रह़मत) से दूर हो गया, दुन्या में मेह़नत बरदाश्त की और आख़िरत में मशक़्क़त उठाई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के दिल में ऐसा रन्जो ग़म डाल दिया जो उस से कभी जुदा न होगा, ऐसी मसरूफ़िय्यत लाज़िम कर दी जिस से वोह कभी फ़ारिग़ न होगा, ऐसे फ़क़्र में मुब्तला कर दिया जिस से कभी छुटकारा न पाएगा और उस के दिल में ऐसी उम्मीदें पैदा कर दीं जो उसे हमेशा मसरूफ़ रखेंगी ।"

ऐ इब्ने आदम ! तेरी उ़म्र हर रोज़ कम हो रही है फिर भी तुझे इस का शुऊ़र नहीं है । मैं हर रोज़ तुझे तेरा रिज़्क़ अ़त़ा करता हूं फिर भी तू शुक्र नहीं करता कि न तो तू कम पर क़नाअ़त करता है और न ही कसीर से तेरा पेट भरता है ।

ऐ इब्ने आदम ! हर दिन मेरे यहां से तेरा रिज़्क़ तेरे पास आता है जब कि फ़िरिश्ते हर रात मेरे पास तेरा बुरा अ़मल ही लाते हैं, मेरा रिज़्क़ खाने के बा वुजूद तू मेरी ना फ़रमानी करता है । तू मुझ से दुआ़ करता है तो मैं क़बूल करता हूं। मेरी जानिब से तो तेरे पास भलाई ही आती है जब कि तेरी त़रफ़ से मेरे पास तेरा शर ही आता है । मैं तेरा कितना बेहतरीन आक़ा व मौला हूं और तू मेरा कितना बद तरीन बन्दा है । तू मुझ से जिस चीज़ का सुवाल करता है मैं तुझे अ़त़ा कर देता हूं । तुझे रुस्वा करने वाली तेरी हर बुराई पर पर्दा डालता हूं । मैं तुझे ढील देता हूं मगर तुझे मुझ से ह़या नहीं आती । तू मुझे भूल कर मेरे इलावा किसी और को याद करता है ।

www.dawateislami.net

तू लोगों से तो ख़ौफ़ज़दा होता है लेकिन मुझ से बे ख़ौफ़ है। उन की नाराज़ी से तो डरता है लेकिन मेरे ग़ज़ब से मुत्मइन है।''

नसीहत नम्बर 5 : क़ब्र की पुकार

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !** तू उस शख़्स की त़रह़ न हो जाना जो तौबा में कोताही करता, लम्बी उम्मीदें बांधता, आख़िरत में बिग़ैर अ़मल के काम्याबी की उम्मीद रखता है। बातें तो आ़बिदों जैसी करता है लेकिन अ़मल मुनाफ़िक़ों जैसा करता है। अगर कुछ अ़त़ा किया जाए तो क़नाअ़त नहीं करता, अगर (रिज़्क़ वग़ैरा) रोक लिया जाए तो सब्र नहीं करता। भलाई का हुक्म तो देता है लेकिन ख़ुद इस पर अ़मल नहीं करता, बुराई से मन्अ़ तो करता है मगर ख़ुद बाज़ नहीं आता। सालिह़ीन से मह़ब्बत तो करता है लेकिन उन जैसे अ़मल नहीं अपनाता। मुनाफ़िक़ीन से बुग़्ज़ो इनाद तो रखता है मगर ख़ुद भी उन्ही जैसे अ़मल करता है। वोह जो कहता है उस पर अ़मल नहीं करता और वोह करता है जिस का उसे हुक्म नहीं दिया गया। जो (ह़क़) ख़ुद पूरा नहीं करता उसे पूरा पूरा वुसूल करना चाहता है।

ऐ इब्ने आदम ! क़ब्र हर रोज़ तुझ से मुख़ात़िब हो कर कहती है : ऐ आदमी (आज तो) तू मेरे ऊपर (अकड़ अकड़ कर) चल रहा है लेकिन (कल) तुझे मेरे अन्दर ग़म सहना होगा। मेरे ऊपर तो शह्वतें तेरी ख़ूराक हैं लेकिन मेरे अन्दर तू कीड़ों की ख़ूराक बनेगा।

ऐ इब्ने आदम ! मैं वह्शत का घर हूं, मैं आज़्माइश का घर हूं, मैं तन्हाई का घर हूं, मैं तारीकी का घर हूं, मैं सांप और बिच्छूओं का घर हूं लिहाज़ा मुझे आबाद कर बरबाद न कर।''

www.dawateislami.net

नसीहत नम्बर 6 : इन्सान की पैदाइश का मक़्सद

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** मैं ने तुम्हें इस लिये पैदा नहीं किया कि तुम्हारे ज़रीए़ कमी में ज़ियादती का ख़्वाहिश मन्द हूं, न ही इस लिये कि तुम्हारे ज़रीए़ वहूशत से उन्स का त़लब गार हूं, न ही इस लिये कि तुम्हें ऐसे काम पर अपना मुआ़विन (या'नी मददगार) बनाऊंगा जिस से मैं आ़जिज़ हूं, न किसी फ़ाएदे के हुसूल के लिये और न ही किसी नुक़्सान को दूर करने के लिये बल्कि मैं ने तुम्हें इस लिये पैदा किया है ताकि त़वील मुद्दत तक तुम मेरी इबादत करो, कसरत से मेरा शुक्र अदा करो और सुब्हो शाम मेरी पाकी बयान करो।

ऐ इब्ने आदम ! अगर तुम्हारे अगले पिछले, जिन्नो इन्स, छोटे बड़े, आज़ाद और ग़ुलाम मेरी इत़ाअ़त पर जम्अ़ हो जाएं, जब भी मेरी बादशाही में ज़र्रा भर भी इज़ाफ़ा नहीं कर सकते। जिस ने कोशिश की उस ने सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिये कोशिश की। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम जहानों से बे परवाह है।

ऐ इब्ने आदम ! जैसे अज़िय्यत दोगे तुम्हें वैसे ही अज़िय्यत दी जाएगी और तुम जैसा करोगे तुम्हारे साथ वैसा ही किया जाएगा।"

नसीहत नम्बर 7 : दिरहमो दीनार के ग़ुलाम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** ऐ दिरहमो दीनार के ग़ुलाम ! मैं ने येह दोनों इस लिये बनाए हैं ताकि इन के ज़रीए़ तुम मेरा रिज़्क़ खाओ, मेरे (अ़त़ा कर्दा) कपड़े पहनो और मेरी अ़ज़मत व बड़ाई का इज़्हार करो लेकिन तुम ने मेरी किताब ले कर पीठ पीछे डाल दी और दिरहमो दीनार सरों पर रख लिये।

www.dawateislami.net

तुम ने अपने घरों को तो आबाद किया लेकिन मेरे घरों (या'नी मसाजिद) को वीरान कर दिया। तुम न तो नेक हो और न ही शरीफ़ बल्कि तुम दुन्या के ग़ुलाम हो। तुम जैसे लोगों की मिसाल गच की (या'नी लीपी) हुई क़ब्रों की त़रह़ है कि जिन का ज़ाहिर तो दिलकश होता है मगर बात़िन (या'नी अन्दरूनी ह़िस्सा) बदतर होता है, यूंही तुम (ज़ाहिरन तो) लोगों की इस्लाह़ करते हो, अपनी मीठी ज़बान और अच्छे कामों से इन से मह़ब्बत करते हो लेकिन (बात़िनन) अपने सख़्त दिलों, बुरी ह़ालतों की वज्ह से उन से दूर हो।

ऐ इब्ने आदम ! अपने अ़मल में इख़्लास पैदा कर के मुझ से सुवाल कर मैं तुझे मांगने वालों की त़लब से कहीं ज़ियादा अ़त़ा करूंगा।''

नसीह़त नम्बर 8 : तक्लीफ़ उठाए बिग़ैर मक़ाम नहीं मिलता

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !** मैं ने तुम्हें यूंही बेकार पैदा नहीं किया, न ही ना क़ाबिले इल्तिफ़ात पैदा किया, और न ही मैं तुम से ग़ाफ़िल हूं बल्कि मैं तुम से बा ख़बर हूं। तुम मेरी रिज़ा में तक्लीफ़ व मशक़्क़त गवारा किये बिग़ैर हरगिज़ मेरी बारगाह में कोई मक़ामो मर्तबा ह़ासिल नहीं कर सकते। तुम्हारे लिये मेरी इत़ाअ़त पर सब्र करना मेरी ना फ़रमानी पर जुर्अत करने से कहीं ज़ियादा आसान है। मुझ से मा'ज़िरत करने की ब निस्बत गुनाह को तर्क कर देना तुम्हारे लिये नारे दोज़ख़ से, ज़ियादा आसान है। दुन्या का अ़ज़ाब, आख़िरत के अ़ज़ाब से तुम्हारे लिये कहीं ज़ियादा आसान है।

ऐ इब्ने आदम ! तुम सब गुमराह हो सिवाए उस के जिसे मैं ने हिदायत दी। तुम सब भटके हुए हो सिवाए उस के जिसे मैं

www.dawateislami.net

ने महफ़ूज़ कर लिया। तुम मेरी बारगाह में तौबा करो मैं तुम पर रहम करूंगा। हर मख़्फ़ी शै को जानने वाले (या'नी रब तआ़ला) के सामने पोशीदा गुनाहों पर डटे न रहो।"

नसीहत नम्बर 9 : मख़्लूक़ पर ला'नत न करो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "**ऐ इब्ने आदम !** मख़्लूक़ पर ला'नत न करो कि ला'नत तुम्हारी त़रफ़ ही लौटा दी जाती है।

ऐ इब्ने आदम ! (सातों) आस्मान हवा में, मेरे नामों में से सिर्फ़ एक नाम की ब-र-कत से बिग़ैर सुतून के क़ाइम हैं जब कि तुम्हारे दिल मेरी किताब की हज़ार नसीहतों से भी सीधे नहीं होते।

ऐ लोगो ! जैसे पथ्थर पानी में नर्म नहीं हो सकता ऐसे ही सख़्त दिल में नसीहत कुछ असर नहीं कर सकती।

ऐ इब्ने आदम ! तुम कैसे गवाही देते हो कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे हो ? फिर (गवाही देने के बा'द) उसी की ना फ़रमानी करते हो। तुम कैसे गुमान करते हो कि मौत बरहक़ है ? ह़ालां कि तुम इसे ना पसन्द करते हो। तुम अपनी ज़बानों से वोह बात कहते हो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं होता और तुम इसे मा'मूली ख़याल करते हो ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक वोह बहुत बड़ी होती है।"

नसीहत नम्बर 10 : ईमान वालों के आ'माल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِۙ (پ۱۱، یونس:۵۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से नसीह़त आई और दिलों की सिह़्ह़त।

www.dawateislami.net

(ऐ इब्ने आदम !) तुम सिर्फ़ उस पर ही एह़सान करते हो, जो तुम्हारे साथ एह़सान करता है, सिर्फ़ उसी के साथ सिलए रेह़्मी करते हो जो तुम्हारे साथ सिलए रेह़्मी करता है, सिर्फ़ उसी से गुफ़्त–गू करते हो जो तुम्हारे साथ गुफ़्त–गू करता है, सिर्फ़ उसी को खाना खिलाते हो जो तुम्हें खिलाता है, सिर्फ़ उसी की इ़ज़्ज़त करते हो जो तुम्हारी इ़ज़्ज़त करता है ह़ालां कि किसी को किसी पर कुछ फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं है (सिवाए तक़्वा के) । ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर ईमान रखते, बुराई करने वालों के साथ भलाई करते, क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी करने वालों के साथ सिलए रेह़्मी करते, मह़रूम करने वालों को मुआ़फ़ करते, ख़ियानत करने वालों को अमान देते, तर्के तअ़ल्लुक़ करने वालों से तअ़ल्लुक़ जोड़ते और बे इ़ज़्ज़ती करने वालों की इ़ज़्ज़त करते हैं। और बेशक मैं तुम्हारे हर अ़मल से बा ख़बर हूं।''

नसीह़त नम्बर 11 : त़ालिबे दुन्या की ह़ैसिय्यत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ लोगो !** दुन्या तो सिर्फ़ उस का घर है जिस का कोई घर नहीं। उस का माल है जिस का कोई माल नहीं। इसे वोही जम्अ़ करता है जिसे कुछ अ़क़्ल नहीं। इस पर वोही ख़ुश होता है जिसे कुछ समझ बूझ नहीं। इस की ह़िर्स सिर्फ़ उसे ही है जिस के पास तवक्कुल नहीं । इस की लज़्ज़ात वोही तलाश करता है जो इस की ह़क़ीक़त से ना वाक़िफ़ है। जिस ने फ़ना हो जाने वाली ने'मत और ख़त्म हो जाने वाली ज़िन्दगी का इरादा किया तह़क़ीक़ उस ने अपने आप पर ज़ुल्म किया और अपने

www.dawateislami.net

रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की, वोह आख़िरत को भूल गया, दुन्या ने उसे धोके में डाल दिया और उस ने गुनाह के ज़ाहिरो बातिन का इरादा किया।

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :)

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَیُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا یَقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۲۰﴾ (پ۸، الانعام:۱۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो गुनाह कमाते हैं अ़न्क़रीब अपनी कमाई की सज़ा पाएंगे।

ऐ इब्ने आदम ! मेरा लिह़ाज़, मेरे साथ तिजारत और मेरे साथ लेन देन करो और मुझ से बत़ौरे मुना-फ़आ़ वोह चीज़ ले लो जिसे न तो किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल पर उस का ख़याल गुज़रा। मेरे ख़ज़ाने न तो कभी ख़त्म होंगे और न ही कम और मैं बड़ा करीमो जवाद हूं।

नसीह़त नम्बर 12 : उ़-लमा की सोह़बत इख़्तियार करो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !**

اُذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَ اَوْفُوْا بِعَهْدِیْۤ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْۚ وَ اِیَّایَ فَارْهَبُوْنِ ﴿۴۰﴾ (پ۱، البقرۃ:۴۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : याद करो मेरा वोह एह़सान जो मैं ने तुम पर किया और मेरा अ़ह्द पूरा करो मैं तुम्हारा अ़ह्द पूरा करूंगा और ख़ास मेरा ही डर रखो।

..... जैसे तुम किसी राहनुमा के बिग़ैर रास्ता तलाश नहीं कर सकते ऐसे ही (नेक) अ़मल के बिग़ैर जन्नत की त़रफ़ कोई रास्ता नहीं।

..... जैसे तदबीर के बिग़ैर माल जम्अ़ नहीं किया जा

www.dawateislami.net

सकता ऐसे ही मेरी इबादत पर सब्र के बिग़ैर तुम जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते ।

लिहाज़ा नवाफ़िल के ज़रीए मेरा क़ुर्ब हासिल करो। मसाकीन की रिज़ा के ज़रीए मेरी रिज़ा तलाश करो । उ-लमा की सोहबत इख़्तियार कर के मेरी रहमत की त़रफ़ रग़बत इख़्तियार करो क्यूं कि उ-लमा से मेरी रहमत पलक झपक्ने की मिक़्दार भी जुदा नहीं होती ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया **: ऐ मूसा** (عَلَيْهِ السَّلَام) **!** जो मैं कह रहा हूं उसे तवज्जोह से सुनो ! येह हक़ है कि जिस ने मिस्कीन पर बड़ाई जताई बरोज़े क़ियामत मैं उसे च्यूंटी की सूरत में उठाऊंगा, जिस ने इस के सामने आजिज़ी व इन्किसारी का इज़्हार किया मैं दुन्या व आख़िरत में उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाऊंगा, जिस ने मसाकीन के राज़ की पर्दा दरी की बरोज़े क़ियामत मैं उसे इस हाल में उठाऊंगा कि उस का कोई भी राज़ पोशीदा न होगा, जिस ने किसी फ़क़ीर की इहानत की तो उस ने मुझ से ए'लाने जंग किया और जो मुझ पर ईमान लाएगा फ़िरिश्ते दुन्या व आख़िरत में उस से मुसा-फ़हा करेंगे ।''

नसीहत नम्बर 13 : तबाही व बरबादी के अस्बाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है **: ''ऐ इब्ने आदम !** कितने चराग़ ऐसे हैं जिन्हें ख़्वाहिशे नफ़्स ने बुझा दिया ?''

..... कितने इबादत गुज़ार ऐसे हैं जिन्हें खुद पसन्दी ने हलाक कर दिया ?

..... कितने मालदार ऐसे हैं जिन्हें मालदारी ने तबाह कर दिया ?

www.dawateislami.net

۞..... कितने मोहताज ऐसे हैं जिन्हें मोहताजी ने बरबाद कर दिया ?

۞..... कितने तन्दुरुस्त ऐसे हैं जिन्हें तन्दुरुस्ती ने बिगाड़ दिया ?

۞..... कितने आ़लिम ऐसे हैं जिन्हें (ग़ैर नाफ़ेअ़) इल्म ने हलाक कर दिया ?

۞..... कितने जाहिल ऐसे हैं जिन्हें जहालत ने तबाहो बरबाद कर दिया ?

लिहाज़ा अगर रुकूअ़ करने वाले उ़म्र रसीदा, गिड़गिड़ाने वाले नौ जवान, दूध पीते बच्चे और चरने वाले जानवर न होते तो मैं तुम पर आस्मान को लोहा, ज़मीन को हमवार मैदान और मिट्टी को राख बना देता और आस्मान से बारिश का एक क़तरा न उतारता, ज़मीन से एक दाना न उगाता बल्कि तुम पर सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल कर देता।''

नसीहत नम्बर 14 : हर चीज़ फ़ानी है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !** तुम जिस क़दर मेरे मोहताज हो उतना ही मुझ से सुवाल करो, आग (या'नी अ़ज़ाब) बरदाश्त करने के बराबर मेरी ना फ़रमानी करो और अपनी ढील दी हुई मौत, मौजूदा रिज़्क़ और पोशीदा गुनाहों से धोका न खाओ। (याद रखो !)

هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۸﴾

(پ۲۰،القصص:۸۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ फिर जाओगे।

www.dawateislami.net

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَّ يَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝

(پ۲۷،الرحمٰن:۲۶،۲۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है, और बाक़ी है तुम्हारे रब की ज़ात अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाला।

नसीह़त नम्बर 15 : सब से बेहतरीन तोशा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** अगर तेरा दीन दुरुस्त रहा तो तेरा अ़मल, तेरा गोश्त और तेरा ख़ून भी दुरुस्त रहेगा और अगर तेरे दीन में बिगाड़ पैदा हो गया तो तेरा अ़मल, तेरा गोश्त और तेरा ख़ून बिगड़ जाएगा। पस तू उस चराग़ की त़रह़ न हो जाना जो ख़ुद को जला कर लोगों को रोशनी मुहय्या करता है। अपने दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकाल दे क्यूं कि मैं किसी दिल में दुन्या और अपनी मह़ब्बत कभी जम्अ़ नहीं करता। रिज़्क़ जम्अ़ करने के मुआ़-मले में अपने नफ़्स के साथ नरमी से पेश आ क्यूं कि रिज़्क़ लिखा जा चुका है। ह़रीस मह़रूम और बख़ील, क़ाबिले मज़म्मत है। ने'मत हमेशा नहीं रहती, (बिग़ैर किसी शर-ई वज्ह के) छानबीन करना नुहूसत, मौत बरह़क़, ह़क़ जाना पहचाना है, सब से अच्छी ह़िक्मत ख़ुशूअ़, सब से उ़म्दा ग़ना (या'नी तवंगरी) क़नाअ़त और सब से बेहतरीन तोशा तक़्वा है। दिल में आने वाली सब से बेहतरीन चीज़ यक़ीन है और तुन्हें अ़त़ा कर्दा ने'मतों में सब से बेहतरीन ने'मत आ़फ़िय्यत है।"

नसीह़त नम्बर 16 : इब्ने आदम की मिसाल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ (پ۲۸، الصف:۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! क्यूं कहते हो वोह जो नहीं करते।

तुम बहुत कुछ कहते हो लेकिन ख़ुद उस के ख़िलाफ़ करते हो। कितनी ऐसी चीज़ें हैं कि जिन से लोगों को तो मन्अ़ करते हो लेकिन ख़ुद उन से बाज़ नहीं आते ?

۞..... कितनी ऐसी बातें हैं कि जिन का हुक्म तो देते हो लेकिन ख़ुद उन पर अ़मल नहीं करते ?

۞..... कितना कुछ जम्अ़ करते हो मगर खाते नहीं हो ?

۞..... तौबा के कितने मवाक़ेअ़ ऐसे हैं कि जिन्हें हर रोज़ टाल देते हो ? बल्कि सालहा साल तक मुअख़्ख़र करते रहते हो फिर तुम्हें मोहलत नहीं दी जाएगी।

۞..... क्या तुम्हें मौत से अमान ह़ासिल हो चुका है ?

۞..... क्या जहन्नम से आज़ादी तुम्हारे हाथ में है ?

۞..... क्या जन्नतों की काम्याबी का तुम्हें यक़ीन ह़ासिल हो गया है ?

۞..... क्या तुम्हारे और रह़मान عَزَّوَجَلَّ के दरमियान रह़मत व मग़्फ़िरत का मुआ़-हदा हो चुका है ?

ने'मतों ने तुम्हें ना शुक्रा कर दिया, एह़सान व भलाई ने तुम्हें बिगाड़ दिया और दुन्या की लम्बी उम्मीद ने तुम्हें धोके में मुब्तला कर दिया। तुम ने सिह़्ह़त व सलामती को ग़नीमत न जाना पस तुम्हारे दिन मुक़र्रर और तुम्हारी सांसें गिनी चुनी रह गई हैं, लिहाज़ा तुम्हारे हाथों में जो कुछ बाक़ी है उसे (अपनी नजात के लिये) आगे भेज दो।

ऐ इब्ने आदम ! तू अपने काम में मु-तवज्जेह है ह़ालां कि

www.dawateislami.net

तेरी पैदाइश के दिन से हर रोज़ तेरी उ़म्र घटती जा रही है और तू हर रोज़ अपनी क़ब्र के क़रीब से क़रीब तर होता जा रहा है अ़न्क़रीब तू उस में दाख़िल हो जाएगा।

ऐ इब्ने आदम ! दुन्या में तुम्हारी मिसाल मख्खी की सी है कि जब भी वोह शह्द पर गिरती है तो उस में फंस कर रह जाती है, तुम्हारा भी येही ह़ाल है। तुम उस लकड़ी की त़रह़ न बन जाना जो ख़ुद को जला कर दूसरों को रोशनी मुहय्या करती है।"

नसीह़त नम्बर 17 : ज़ाहिर ह़सीन, बात़िन ख़राब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** वोह आ'माल इख़्तियार कर जिन का मैं ने तुझे हुक्म दिया है और उन से रुक जा जिन से मैं ने तुझे मन्अ़ किया है फिर मैं तुझे ऐसी ह़याते जाविदानी (या'नी हमेशा की ज़िन्दगी) अ़त़ा करूंगा कि तुझे कभी मौत नहीं आएगी, और मैं ज़िन्दा हूं मुझे कभी मौत नहीं आएगी। जब मैं किसी शै को "कुन" (या'नी हो जा) कहता हूं तो वोह हो जाती है।

ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरा अन्दाज़े गुफ़्त-गू दिलकश और अ़मल बुरा है तो तू मुनाफ़िक़ीन का सरदार है और अगर तेरा ज़ाहिर ह़सीन और बात़िन ख़राब है तो तू उन हलाक होने वालों में से है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को फ़रेब दिया चाहते हैं और वोही उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा।

(चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में इर्शाद होता है :)

وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ (پ۱، البقرہ: ۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ह़क़ीक़त में फ़रेब नहीं देते मगर अपनी जानों को और उन्हें शुऊ़र नहीं।

www.dawateislami.net

ऐ इब्ने आदम ! जन्नत में सिर्फ़ वोही शख़्स दाख़िल होगा जिस ने मेरी अ़ज़मत व बुज़ुर्गी की ख़ातिर तवाज़ोअ़ इख़्तियार की, सारा दिन मेरे ज़िक्र में मश्ग़ूल रहा और मेरे ख़ौफ़ की वज्ह से ख़ुद को शह्वात से रोके रखा। बेशक मैं ही ग़रीब को पनाह, फ़क़ीर को अम्न और यतीम को इ़ज़्ज़त देने वाला हूं, इस के लिये शफ़ीक़ बाप से भी ज़ियादा मेह्रबान और बेवा के लिये शफ़ीक़ व मेह्रबान शोहर से भी ज़ियादा मेह्रबान हूं। लिहाज़ा जो बन्दा इन सिफ़ात का ह़ामिल होगा मैं उस की हर फ़रमाइश पूरी करूंगा, जब वोह मुझ से किसी चीज़ के बारे में दुआ़ करेगा तो मैं उस की दुआ़ क़बूल करूंगा और जब मुझ से सुवाल करेगा तो उसे अ़ता फ़रमाऊंगा।''

नसीह़त नम्बर 18 : इब्ने आदम पर करम नवाज़ियां

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''**ऐ इब्ने आदम !** जब मेरी मिस्ल कोई नहीं तो मेरे इ़लावा किस से फ़रियाद करोगे।

۞..... कब तक मुझे भुलाए रखोगे ह़ालां कि मैं इस का सज़ावार नहीं (कि तुम मुझे भुला दो)।

۞..... कब तक मेरी ना शुक्री करते रहोगे ह़ालां कि मैं बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता ?

۞..... कब तक मेरी ने'मतों को झुटलाते रहोगे ?

۞..... कब तक मेरे अह़काम की तौहीन करते रहोगे ह़ालां कि मैं ने तुम पर तुम्हारी ता़क़त से ज़ियादा बोझ नहीं डाला ?

۞..... कब तक मुझ से जफ़ा करते रहोगे ?

۞..... कब तक मेरा इन्कार करते रहोगे ह़ालां कि मेरे इ़लावा तुम्हारा कोई और रब (या'नी पालने वाला) नहीं ?

www.dawateislami.net

۞..... जब तुम बीमार होते हो तो मेरे इलावा कौन सा तबीब तुम्हें शिफ़ा देता है ? पस तुम मुझ से शिक्वा करते और मेरे फ़ैसले से ना खुश होते हो ।

۞..... मैं ही हूं जो आस्मान से तुम पर मूसलाधार बारिश बरसाता हूं तो तुम कहते हो कि येह फुलां सितारे के सबब बरसाई गई है । इस तरह तुम मेरा इन्कार करते और सितारे पर ईमान लाते हो ।

۞..... मैं ही हूं कि तुम पर तै शुदा, तुली हुई, गिनी हुई, वज़्न की हुई, लिखी हुई मिक़्दार में रहमत नाज़िल करता हूं। अगर तुम में से किसी को तीन दिन की ग़िज़ा मिल जाए तो फिर भी वोह येही कहता है कि मैं मुसीबत में हूं, कोई भलाई नहीं पहुंची । पस उस ने मेरी ने'मत की ना शुक्री की ।

۞..... जिस ने माल की ज़कात अदा न की बेशक उस ने मेरे हुक्म को हलका जाना और जब उसे वक़्ते नमाज़ का इल्म हो गया और उस की अदाएगी का इरादा न किया तो वोह मुझ से ग़ाफ़िल हो गया ।''

۞۞۞۞۞۞۞

नसीहत नम्बर 19 : नेकियां अपनाओ और ब-र-कतें पाओ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !** सब्र और आजिज़ी की आदत अपना मैं तुझे बुलन्दी अता फ़रमाऊंगा, मेरा शुक्र कर मज़ीद ने'मतें अता करूंगा, मुझ से मग़्फ़िरत तलब कर तुझे बख़्श दूंगा, मुझ से दुआ मांग तेरी दुआ क़बूल करूंगा, मेरी बारगाह में तौबा कर क़बूल करूंगा, मुझ से सुवाल कर अता करूंगा, स-दक़ा कर तेरे रिज़्क़ में ब-र-कत डाल दूंगा, सिलए रेहमी कर तेरी ज़िन्दगी बढ़ा दूंगा, देर पा तन्दुरुस्ती के साथ

www.dawateislami.net

आफ़िय्यत, तन्हाई में सलामती, (नेकियों की) रग़बत में इख़्लास, मेरी बारगाह में सच्ची तौबा करते हुए परहेज़ गारी और क़नाअ़त इख़्तियार करते हुए मुझ से किफ़ायत शिआ़री का सुवाल कर।

ऐ इब्ने आदम ! शिकम सैर होने के साथ इबादत की ख़्वाहिश कैसे करते हो ?

۞..... मालो दौलत की महब्बत के साथ महब्बते इलाही की तमन्ना क्यूं कर करते हो ?

۞..... मोहताजी का ख़ौफ़ रखते हुए ख़ौफ़े खुदा की ख़्वाहिश कैसे करते हो ?

۞..... दुन्या की हिर्स के साथ साथ तक़्वा व परहेज़ गारी की तमअ़ कैसे रखते हो ?

۞..... मिस्कीनों (की मुआ़-वनत) के बिग़ैर रिज़ाए इलाही कैसे तलाश करते हो ?

۞..... बुख़्ल करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की तमन्ना क्यूं कर करते हो ?

۞..... दुन्या की महब्बत और अपनी वाह वाह के साथ साथ त-लबे जन्नत की ख़्वाहिश कैसे करते हो ?

۞..... इल्म की कमी के साथ काम्याबी की तमन्ना क्यूं कर करते हो ?''

۞۞۞۞۞۞۞

नसीहत नम्बर 20 : बे मिसाल ख़ूबियां

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ लोगो !** किफ़ायत शिआ़री जैसी कोई ज़िन्दगी नहीं, तक्लीफ़ देने से बाज़ आने जैसा कोई तक़्वा नहीं, अदब (या'नी ता'ज़ीम) से बढ़ कर कोई महब्बत नहीं, तौबा जैसा कोई शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाला) नहीं,

www.dawateislami.net

इल्म जैसी कोई इबादत नहीं, ख़ौफ़ो ख़शिय्यत जैसी कोई दुआ नहीं। सब्र जैसी कोई काम्याबी नहीं, तौफ़ीक़ जैसी कोई ख़ुश बख़्ती नहीं, अ़क़्ल से ज़ियादा आरास्ता कोई ज़ीनत नहीं, बुर्द-बारी से ज़ियादा मानूस कोई दोस्त नहीं।

ऐ इब्ने आदम ! ख़ुद को मेरी इबादत के लिये फ़ारिग़ कर ले मैं तेरे दिल को ग़ना (या'नी तवंगरी) से भर दूंगा, तेरे रिज़्क़ में ब-र-कत डाल दूंगा और तेरे जिस्म को राहत व सुकून अ़ता करूंगा। मेरे ज़िक्र से कभी ग़ाफ़िल न होना क्यूं कि अगर तू मेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो गया तो तेरे दिल को मोहताजी से, जिस्म को थकावट व बीमारी से और तेरे सीने को ग़म से भर दूंगा। और अगर तू अपनी बाक़ी मांदा ज़िन्दगी की क़द्र जान ले तो अपनी बक़िय्या उम्मीदों में तू ज़रूर परहेज़ गारी इख़्तियार करेगा।

ऐ इब्ने आदम ! मेरी अ़ता कर्दा आ़फ़िय्यत के ज़रीए़ ही तूने मेरी इताअ़त पर क़ुव्वत हासिल की, मेरी दी हुई तौफ़ीक़ के साथ ही मेरे फ़र्ज़ को अदा किया, मेरे दिये हुए रिज़्क़ के ज़रीए़ ही मेरी ना फ़रमानी पर ताक़त हासिल की, तूने जो कुछ चाहा मेरी मशिय्यत से ही चाहा, अपने लिये जो कुछ किया मेरे इरादे ही से किया, मेरी ने'मत के ज़रीए़ तू खड़ा हुवा, बैठा और लोटा, मेरी हिफ़ाज़त में ही तूने सुब्ह़ व शाम की, मेरे फ़ज़्लो करम से ही तूने ज़िन्दगी बसर की, मेरी अ़ता कर्दा ने'मतें ही इस्ति'माल कीं, मेरी दी हुई आ़फ़िय्यत से ही आरास्ता हुवा फिर मुझे भूल गया और मेरे ग़ैर को याद रखा तूने मेरा ह़क़ और शुक्र क्यूं अदा न किया ?''

नसीह़त नम्बर 21 : ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ न रहना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !**

www.dawateislami.net

मौत तेरे भेदों पर से पर्दा उठा देगी, क़ियामत तेरे आ'माल की आज़्माइश करेगी, (जहन्नम का) अ़ज़ाब तेरे राज़ों की पर्दा दरी कर देगा, पस किसी गुनाह को छोटा न समझना, हां येह ज़रूर देखना कि तू किस की ना फ़रमानी कर रहा है। जब तुझे थोड़ा रिज़्क़ दिया जाए तो तू उस की क़िल्लत को न देखना, मगर उसे ज़रूर देखना जिस ने तुम्हें रिज़्क़ दिया। किसी सग़ीरा गुनाह को मा'मूली मत समझना क्यूं कि तुम नहीं जानते कि किस गुनाह से तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर दो। मेरी ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ न रहना क्यूं कि मेरी ख़ुफ़्या तदबीर अंधेरी रात में पहाड़ पर मौजूद च्यूंटी के रेंगने से भी ज़ियादा पोशीदा है।

ऐ इब्ने आदम ! क्या मेरी ना फ़रमानी के बा'द मेरे ग़ज़ब को याद किया ?

۞..... जिस से मैं ने तुझे मन्अ़ किया, क्या उस से बाज़ रहा ?''

۞..... क्या मेरे फ़र्ज़ को ऐसे ही अदा किया जैसा कि मैं ने हुक्म दिया ?

۞..... क्या अपने माल से मिस्कीनों की मदद की ?

۞..... क्या अपने साथ बुराई से पेश आने वाले के साथ भलाई की ?

۞..... क्या उसे मुआ़फ़ किया जिस ने तुझ पर ज़ुल्म किया ?

۞..... क्या क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी करने वाले के साथ सिलए रेह्मी की ?

۞..... क्या ख़ियानत करने वाले के साथ इन्साफ़ किया ?

www.dawateislami.net

۞...... क्या तर्के तअ़ल्लुक़ करने वाले के साथ कलाम किया (या'नी तअ़ल्लुक़ जोड़ा) ?

۞...... क्या अपने वालिद का अ-दबो एहतिराम किया ?

۞...... क्या पड़ोसी को राज़ी किया ?

۞...... क्या अपने दीनी व दुन्यावी मुआ़-मले में उ़-लमा से सुवाल किया ?

(सुनो !) मैं तुम्हारी सूरतों और जिस्मानी ख़ूबियों को नहीं बल्कि तुम्हारे दिलों को देखता और तुम्हारी इन ख़स्लतों से राज़ी होता हूं।"

۞۞۞۞۞۞۞

नसीहत नम्बर 22 : क़ियामत की दहशतें

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** अपने आप को और मेरी सारी मख़्लूक़ को देख अगर ख़ुद से बढ़ कर किसी को इ़ज़्ज़त दार पाए तो उस की इ़ज़्ज़त व शराफ़त को अपनी त़रफ़ फैर दे वगर्ना तौबा और नेक अ़मल के ज़रीए ख़ुद को मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम बनाने की कोशिश कर अगर तेरा नफ़्स तुझ पर ग़ालिब है तो अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़सान और वोह अ़ह्द याद कर जो उस ने तुम से किया था जब कि तुम ने कहा था कि हम ने सुना और माना। और क़ियामत, हार वालों की हार खुलने और ह़क़ (या'नी ह़ाज़िर) होने वाली के दिन से क़ब्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो।

(जिस के बारे में क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :)

كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ﴿۴﴾ (پ۲۹، معارج:۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह अ़ज़ाब उस दिन होगा जिस की मिक़्दार पचास हज़ार बरस है।

www.dawateislami.net

يَوْمَ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿۳۶﴾ (پ۲۹،مرسلت:۳۵،۳۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : दिन है कि वोह न बोल सकेंगे और न उन्हें इजाज़त मिले कि उ़ज़्र करें ।

आ़म मुसीबत और चिंघाड़ के दिन से डरो । (चुनान्चे, इर्शाद होता है :)

يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ﴿۱۰﴾

(پ۲۹،الدھر:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है ।

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ؕ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿۱۹﴾

(پ۳۰،الانفطار:۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी और सारा हुक्म उस दिन **अल्लाह** का है ।

पानी न मिलने के दिन, ज़ल्ज़ला और दिल हिला देने वाली के दिन, पहाड़ों को ज़ोर ज़ोर से हिलाए जाने के दिन, सज़ा के रवा होने के दिन, जल्द ज़वाल आने के दिन, चिंघाड़ और पकड़ के दिन और उस दिन के आने से क़ब्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो जिस में बच्चे बूढ़े हो जाएंगे ।''

(चुनान्चे, क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :)

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۱﴾ (پ۹،الانفال:۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन जैसे न होना जिन्हों ने कहा हम ने सुना और वोह नहीं सुनते ।

नसीहत नम्बर 23 : ज़बान को आज़ाद न छोड़ो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ (پ۲۲،الاحزاب:۴۱،۴۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** को बहुत याद करो। और सुब्ह़ व शाम उस की पाकी बोलो।

ऐ मूसा बिन इमरान (عَلَيْهِ السَّلَام) **!** ऐ साह़िबे बयान ! मेरा कलाम तवज्जोह से सुनो ! मैं **अल्लाह** हूं, मैं मलिकुद्दय्यान (या'नी क़ह्हारो जब्बार बादशाह) हूं, मेरे और तेरे दरमियान कोई तरजुमान नहीं। सूदख़ोर को मेरे ग़ज़ब और दूनी आग की ख़बर सुना दो।

ऐ इब्ने आदम ! जब तू अपने दिल में सख़्ती, जिस्म में बीमारी, रिज़्क़ में तंगी और माल में कमी पाए तो जान लेना कि येह तेरे ला या'नी (या'नी फ़ुज़ूल) कलाम करने के सबब है।

ऐ इब्ने आदम ! तेरा दीन उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं हो सकता जब तक तेरी ज़बान सीधी न हो और तेरी ज़बान तब तक सीधी नहीं हो सकती जब तक तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ह़या न करे।

ऐ इब्ने आदम ! जब तू लोगों के उ़यूब देखे और अपने ऐ़बों को भूल जाए तो बेशक तूने शैत़ान को राज़ी और रह़मान عَزَّوَجَلَّ को ग़ज़बनाक (या'नी नाराज़) किया।

ऐ इब्ने आदम ! तेरी ज़बान शेर की मानिन्द है अगर तूने इसे छोड़ दिया तो येह तुझे क़त्ल कर डालेगी, पस तेरी हलाकत इसे आज़ाद छोड़ने में (पोशीदा) है।"

नसीह़त नम्बर 24 : रोज़े और क़ियाम का इन्आ़म

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (खुले दुश्मन शैत़ान के बारे में तम्बीह करते हुए, कु़रआने पाक में) इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ (پ۲۲،الفاطر:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो।

www.dawateislami.net

(लिहाज़ा) **ऐ इब्ने आदम !** उस दिन को जान लो जिस में तुम्हें गुरौह दर गुरौह उठाया जाएगा, तुम रह़मान عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर सफ़ ब सफ़ खड़े हो कर ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ आ'माल नामा पढ़ोगे, छुप कर और ए'लानिया किये गए तमाम गुनाहों के बारे में तुम से सुवाल किया जाएगा।

(चुनान्चे, क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :)

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿۸۵﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿۸۶﴾ (پ۱۶، مریم:۸۵،۸۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन हम परहेज़ गारों को रह़मान की त़रफ़ ले जाएंगे मेहमान बना कर और मुजरिमों को जहन्नम की त़रफ़ हांकेंगे प्यासे।

इस में तुम से वा'दा भी है और तुम्हारे लिये वई़द भी। बेशक मैं **अल्लाह** हूं, मेरा कोई मिस्ल नहीं, मेरे ग़-लबे व इक़्तिदार की त़रह़ किसी का ग़-लबा व इक़्तिदार नहीं। जिस ने अपनी ज़िन्दगी में इख़्लास के साथ रोज़े रखे मैं उसे मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खानों से इफ़्त़ार कराऊंगा। जिस ने रात भर क़ियाम किया मैं उसे अपनी त़रफ़ से एक ख़ास शान या'नी आ'ला मर्तबा अ़त़ा फ़रमाऊंगा। जिस ने मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों से अपनी आंखों को झुका लिया (या'नी उन्हें देखने से बचा) मैं उसे जहन्नम से अमान अ़त़ा कर दूंगा। मैं ही (तुम्हारा) रब عَزَّوَجَلَّ हूं, लिहाज़ा मुझे पहचानो।

۞..... मैं ही ने'मतें अ़त़ा करने वाला हूं मेरा शुक्र अदा करो।

۞..... मैं ही (तुम्हारा) निगह्बान व मुह़ाफ़िज़ हूं मुझे याद रखो।

۞..... मैं ही (तुम्हारा) मददगार हूं, लिहाज़ा मेरे (दीन के) मददगार बन जाओ।

www.dawateislami.net

۞..... मैं ही मग़्फ़िरत करने वाला हूं, लिहाज़ा मुझ से ही बख़्शिश त़लब करो।

۞..... मैं ही मत़्लूब व मक़्सूद हूं, लिहाज़ा मुझे ही पाने का क़स्द करो।

۞..... मैं ही अ़त़ा करने वाला हूं, लिहाज़ा मुझ से ही सुवाल करो।

۞..... मैं ही मा'बूदे ह़क़ीक़ी हूं, लिहाज़ा मेरी ही इबादत करो।

۞..... मैं (तुम्हारे तमाम आ'माल से) बा ख़बर हूं, लिहाज़ा मुझ से डरो।''

नसीह़त नम्बर 25 : दुश्मने ख़ुदा से ग़फ़्लत क्यूं ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !**

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۙ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآىٕمًۢا بِالْقِسْطِؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ(۱۸) اِنَّ الدِّیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ (پ۳،آل عمران:۱۸،۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़रिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर, उस के सिवा किसी की इबादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला ह़िक्मत वाला बेशक **अल्लाह** के यहां इस्लाम ही दीन है।

وَ مَنْ یَّبْتَغِ غَیْرَ الْاِسْلَامِ دِیْنًا فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْهُۚ وَ هُوَ فِی الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ(۸۵) (پ۳،آل عمران:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वोह हरगिज़ उस से क़बूल न किया जाएगा और वोह आख़िरत में ज़ियांकारों से है।

हर एक को जन्नत की बेहतरीन ख़ुश ख़बरी हो।

www.dawateislami.net

۞..... जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अच्छी त़रह़ पहचान कर उस की इत़ाअ़त की वोह नजात पा गया।

۞..... जिस ने शैत़ान को जान कर उस की ना फ़रमानी की वोह मह़फ़ूज़ हो गया।

۞..... जिस ने ह़क़ पहचान कर उस की इत्तिबाअ़ की वोह बे ख़ौफ़ हो गया।

۞..... जिस ने बात़िल को जान कर उस से बचने की सअ़ूय (या'नी कोशिश) की वोह काम्याब हो गया।

۞..... जिस ने शैत़ान और दुन्या को जान कर उन्हें ठुकरा दिया वोह सआ़दत मन्द हो गया।

۞..... जिस ने आख़िरत को पहचान कर उसे तलाश (करने का इरादा) किया वोह हिदायत पा गया, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है हिदायत अ़त़ा फ़रमाता है और तुम्हें उसी की त़रफ़ फिरना है।

ऐ इब्ने आदम ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे रिज़्क़ का कफ़ील है तो फिर तेरा त़वील मुद्दत का एहतिमाम किस लिये ?

۞..... जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इ़वज़ मिल जाता है तो फिर बुख़्ल काहे का ?

۞..... जब इब्लीस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन है तो फिर इस से ग़फ़्लत क्यूं ?

۞..... जब दोज़ख़ का अ़ज़ाब (बरह़क़) है तो फिर इस्तिराह़त व सुकून किस लिये ?

۞..... जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाला सवाब जन्नत है तो फिर ना फ़रमानी क्यूं ?

۞..... जब हर चीज़ मेरे (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के)

www.dawateislami.net

फ़ैसले के मुताबिक़ है तो फिर जज़अ़ व फ़ज़अ़ काहे की ?''

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :)

لِكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ﴿۲۳﴾

(پ۲۷،الحدید:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : इस लिये कि ग़म न खाओ उस पर जो हाथ से जाए और ख़ुश न हो उस पर जो तुम को दिया और **अल्लाह** को नहीं भाता कोई इतरोना (शैख़ी बघारने वाला) बड़ाई मारने वाला।

नसीहत नम्बर 26 : मेरे हो जाओ मैं तुम्हारा हो जाऊंगा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !** कसीर ज़ादे राह इकठ्ठा कर लो क्यूं कि रास्ता बहुत त़वील है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये रोज़ाना क़ियाम किया करो इस लिये कि जन्नत के रास्ते में ह़ाइल घाटियां बहुत गहरी हैं, अच्छे आ'माल बजा लाओ क्यूं कि पुल बहुत बारीक है, हर काम इख़्लास के साथ करो कि परख्ने वाला बा ख़बर है। तुम्हारी ख़्वाहिशात जन्नत में और राह़त व सुकून आख़िरत में है और तुम्हारे पास बड़ी आंखों वाली ह़ूरें होंगी, लिहाज़ा तुम मेरे हो जाओ मैं तुम्हारा हो जाऊंगा। दुन्या में आ़जिज़ी व इन्किसारी और फ़रमां बरदारों से मह़ब्बत करने के सबब मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेकोकारों का अज्र ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाता।

नसीहत नम्बर 27 : जहन्नम के अ़ज़ाबात

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !** तुम कैसे ना फ़रमानी करते हो ह़ालां कि सूरज की तपिश से घबरा जाते

www.dawateislami.net

हो, जब कि जहन्नम के सात त़बक़ात हैं जिन में ऐसी आग है जिस का बा'ज़ बा'ज़ को खा रहा है (या'नी बहुत तेज़ आग है), इस के हर त़बक़े में आग की 70 हज़ार घाटियां हैं, हर घाटी में 70 हज़ार घर हैं, हर घर में 70 हज़ार कमरे हैं, हर कमरे में 70 हज़ार कूंएं हैं, हर कूंएं में आग के 70 हज़ार ताबूत हैं, हर ताबूत में आग के 70 हज़ार बिच्छू हैं, हर ताबूत पर ज़क़्क़ूम[1] के 70 हज़ार दरख़्त हैं, हर दरख़्त के नीचे जहन्नम के 70 हज़ार सर-बराह हैं, हर सर-बराह के साथ 70 हज़ार फ़रिश्ते, और (हर ताबूत में) 70 हज़ार अज़्दहे हैं, हर अज़्दहे की लम्बाई आग के 70 हज़ार हाथ हैं, हर अज़्दहे के पेट में सियाह ज़हर का समुन्दर है, और (ताबूत में मौजूद) हर बिच्छू की हज़ार दुमें हैं, हर दुम की लम्बाई 70 हज़ार हाथ है, हर दुम में सुर्ख़ ज़हर के 70 हज़ार रित्ल हैं (रत्ल मख़्सूस वज़्न या पैमाने को कहते हैं), मुझे अपनी ज़ात की क़सम !

وَالطُّوْرِ ۙ﴿۱﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۙ﴿۲﴾ فِیْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۙ﴿۳﴾ وَّالْبَیْتِ الْمَعْمُوْرِ ۙ﴿۴﴾ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۙ﴿۵﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۙ﴿۶﴾ (پ۲۷، الطور:۱تا۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तूर की क़सम और उस नविश्ते की जो खुले दफ़्तर में लिखा है और बैते मा'मूर और बुलन्द छत और सुलगाए हुए समुन्दर की ।

ऐ इब्ने आदम ! मैं ने इस दोज़ख़ को काफ़िर, चुग़ुल ख़ोर, वालिदैन के ना फ़रमान, रियाकार, माल की ज़कात अदा न करने वाले, ज़ानी, सूदख़ोर, शराबी, यतीम पर ज़ुल्म करने वाले, धोकेबाज़, नौह़ा करने वाले और पड़ोसियों को अज़िय्यत पहुंचाने वालों के लिये पैदा किया है ।

1..... ज़क़्क़ूम : एक तल्ख़ और बदबूदार दरख़्त जिस का फल अहले दोज़ख़ की ग़िज़ा है ।

www.dawateislami.net

(कुरआने पाक में इर्शाद होता है :)

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

(پ۱۹، الفرقان: ۷۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तो ऐ मेरे बन्दो ! अपनी जानों पर रह़्म करो क्यूं कि बदन कमज़ोर, सफ़र लम्बा, बोझ भारी पुल बारीक, परख़्ने वाला बा ख़बर और फ़ैसला फ़रमाने वाला रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ है।

नसीह़त नम्बर 28 : जन्नत के इन्आ़मात

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ लोगो !** तुम ख़त्म होने वाली दुन्या और मुन्क़त़्अ़ होने वाली ज़िन्दगी में कैसे दिलचस्पी रखते हो ? बेशक इत़ाअ़त गुज़ारों के लिये जन्नतें हैं जिन के आठ दरवाज़ों से वोह दाख़िल होंगे, हर जन्नत में 70 हज़ार बाग़ हैं, हर बाग़ में याक़ूत के 70 हज़ार मह़ल हैं, हर मह़ल में ज़ुमुर्रुद की 70 हज़ार ह़वेलियां हैं, हर ह़वेली में सुर्ख़ सोने के 70 हज़ार घर हैं, हर घर में इन्तिहाई सफ़ेद चांदी के 70 हज़ार कमरे हैं, हर कमरे में मटियाले रंग के 70 हज़ार दस्तर ख़्वान हैं, हर दस्तर ख़्वान पर जवाहिरात की 70 हज़ार रिकाबियां हैं, हर रिकाबी में 70 क़िस्म के खाने हैं, हर कमरे के इर्द गिर्द सुर्ख़ सोने के 70 हज़ार तख़्त हैं, हर तख़्त पर रेशम, इस्तब्रक़ (एक ख़ास क़िस्म का नफ़ीस कपड़ा) और दीबाज (क़ीमती रेशमी कपड़ा जिस का ताना बाना रेशम का होता है) की 70 हज़ार चादरें हैं, हर तख़्त के इर्द गर्द आबे ह़यात, दूध, शह्द और (पाकीज़ा) शराब की 70 हज़ार नहरें हैं, हर नह्र के बीच में

www.dawateislami.net

70 हज़ार अक़्साम के फल हैं, हर घर में गहरे सुर्ख़ रंग के 70 हज़ार ख़ैमे हैं, हर बिछोने पर बड़ी आंखों वाली हूरों में से एक हूर होगी जिस के सामने 70 हज़ार ऐसी ख़ादिमाएं होंगी गोया कि वोह अन्डे हैं, हर महल के इब्तिदाई हिस्से में 70 हज़ार कुब्बे हैं, हर कुब्बे में रहमान عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से 70 हज़ार ऐसे तोहफ़े हैं कि जिन्हें न तो किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल में उस का ख़याल गुज़रा।

(**अल्लाह** جَلَّ جَلَالُہٗ कुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :)

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۙ﴿۲۰﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ؕ﴿۲۱﴾ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۙ﴿۲۲﴾ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۚ﴿۲۳﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾ (پ۲۷، الواقعة: ۲۰ تا ۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मेवे जो पसन्द करें और परिन्दों का गोश्त जो चाहें और बड़ी आंख वालियां हूरें जैसे छुपे रखे हुए मोती सिला उन के आ'माल का।

उन्हें इस में न तो मौत आएगी, न बूढ़े होंगे, न ग़मगीन, न रोज़ा रखेंगे, न नमाज़ अदा करेंगे, न बीमार होंगे और न ही बौलो बराज़ करेंगे (या'नी पेशाब व पाख़ाना न करेंगे बल्कि ग़िज़ा ख़ुश्बूदार पसीना बन कर जिस्म से निकल जाएगी)।

(चुनान्चे, कुरआने पाक में इर्शाद होता है :)

وَمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ﴿۴۸﴾ (پ۱۴، الحجر: ۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न वोह इस में से निकाले जाएं।

लिहाज़ा जो इसे तलब करना चाहे और जिसे मेरा ए'ज़ाज़ो इक्राम, जवारे रहमत और मेरी ने'मत याद हो तो उसे चाहिये कि वोह सच्चाई, दुन्या की इहानत और कम पर क़नाअ़त करते हुए मेरा कुर्ब हासिल करने की कोशिश करे।''

www.dawateislami.net

नसीहत नम्बर 29 : तेरा और मेरा हिस्सा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** माल मेरा है जब कि तू मेरा बन्दा है, मेरे माल से तेरा सिर्फ़ उतना हिस्सा जितना तूने खा कर ख़त्म कर दिया या पहन कर बोसीदा कर दिया या स-दक़ा कर के महफ़ूज़ कर लिया। मेरा और तेरा हिस्सा तीन क़िस्म पर है : एक मेरे लिये ख़ास और एक तेरे लिये, जब कि एक हम दोनों के लिये है। जो मेरे लिये ख़ास है वोह तेरी रूह है, जो तेरे लिये ख़ास है वोह तेरा अमल है और जो हम दोनों के लिये है वोह येह है कि तू दुआ करे और मैं उसे क़बूल करूं।

ऐ इब्ने आदम ! तक़्वा व परहेज़ गारी और क़नाअत इख़्तियार कर तुझे मेरा दीदार नसीब होगा, मेरी इबादत कर मेरा हो जाएगा और मुझे तलाश कर, पा लेगा।

ऐ इब्ने आदम ! जब तू भी उन उ-मरा की मिस्ल हो जाएगा जो फ़िस्क़ो फ़ुजूर की वज्ह से आग में दाख़िल होंगे, उन अ-रबों की तरह हो जाएगा जो ना फ़रमानी के सबब जहन्नम में दाख़िल होंगे, उन उ-लमा की मिस्ल हो जाएगा जो हसद की वज्ह से अज़ाब में मुब्तला होंगे, उन ताजिरों की तरह हो जाएगा जो ख़ियानत के सबब जहन्नम में दाख़िल होंगे, उन जब्रिया की तरह हो जाएगा जो जहालत की वज्ह से आग में दाख़िल होंगे, उन इबादत गुज़ारों की तरह हो जाएगा जो रियाकारी की आफ़त के सबब मूरिदे अज़ाब होंगे, उन मालदारों की तरह हो जाएगा जो तकब्बुर में मुब्तला होने की वज्ह से उस में दाख़िल होंगे और उन फु-क़रा की तरह हो जाएगा जो झूट जैसे कबीरा गुनाह के सबब दाख़िले जहन्नम होंगे तो फिर कोई जन्नत का तालिब कहां से होगा ?

www.dawateislami.net

नसीहत नम्बर 30 : अह़मक़ को नसीहत की मिसाल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ (پ٤،ال عمران:١٠٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसल्मान ।

ऐ इब्ने आदम ! बिग़ैर अ़मल के इ़ल्म बिग़ैर बारिश, चमक और कड़क की त़रह़ है ।

۞..... इ़ल्म के बिग़ैर अ़मल बिग़ैर फल के दरख़्त की त़रह़ है ।

۞..... अ़मल के बिग़ैर आ़लिम की मिसाल बिग़ैर तांत कमान की त़रह़ है ।

۞..... ज़कात अदा न करने वाले की मिसाल पहाड़ पर नमक काश्त करने वाले की त़रह़ है ।

۞..... अह़मक़ को नसीह़त करना जानवरों के गले में मोती और जवाहिरात डालने की त़रह़ है ।

۞..... इ़ल्म के बा वुजूद सख़्त दिली दाग़दार पथ्थर की मानिन्द है ।

۞..... नसीह़त की रग़बत न रखने वाले को नसीह़त करना क़ब्रों के पास बांसरी बजाने की त़रह़ है ।

۞..... माले ह़राम से स-दक़ा करने की मिसाल उस शख़्स की सी है जो अपने कपड़े पर लगी गन्दगी को अपने पेशाब से धोए ।

۞..... दिल की सफ़ाई के बिग़ैर नमाज़, बिग़ैर रूह़ के जिस्म की त़रह़ है ।

www.dawateislami.net

۞..... और बिग़ैर तौबा के इल्म वाले की मिसाल बिग़ैर बुन्याद इमारत की सी है।

(कुरआने मजीद में इर्शाद होता है :)

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹۹﴾

(پ۹،الاعراف:۹۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या **अल्लाह** की ख़फ़ी तदबीर से बे ख़बर हैं तो **अल्लाह** की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।

۞۞۞۞۞۞۞

नसीहत नम्बर 31 : अ़ज़ीमुश्शान बिशारतें

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "**ऐ इब्ने आदम !** तेरे दिल में मेरी महब्बत, तेरे दुन्या की त़रफ़ मैलान के मुत़ाबिक़ होगी (या'नी दिल में जिस क़दर दुन्या की महब्बत ज़ियादा होगी उसी क़दर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत कम होगी) क्यूं कि मैं कभी किसी दिल में अपनी और दुन्या की महब्बत को जम्अ़ नहीं करूंगा।

ऐ इब्ने आदम ! तक़्वा इख़्तियार कर मेरी मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाएगी।

۞..... फ़ाक़ा कशी की आ़दत डाल मेरा दीदार नसीब होगा।

۞..... मेरी इबादत पर कमर बस्ता हो जा मेरा विसाल (या'नी कुर्ब) नसीब हो जाएगा।

۞..... अपने अ़मल को रिया से पाक कर तुझे अपनी महब्बत का लिबास पहनाऊंगा।

۞..... मेरे ज़िक्र में मुन्हमिक हो जा अपने मलाएका के सामने तेरा ज़िक्र करूंगा।

۞..... **ऐ इब्ने आदम !** तेरे दिल में ग़ैरुल्लाह, तेरी

www.dawateislami.net

उम्मीद गाह ग़ैरुल्लाह है, तू कब तक कहता रहेगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बुलन्दो बरतर है। हालां कि तुझे ख़ौफ़ तो ग़ैरुल्लाह का है ? अगर तू हक़ को पहचान लेता तो ग़ैरुल्लाह तुझे तश्वीश में मुब्तला न करता। तू सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ही डरता और उस के ज़िक्र से अपनी ज़बान को न रोकता। क्यूं कि महज़ ज़ाहिरी तौर पर गुनाहों पर इसरार से रुक जाना झूटों की तौबा है।

ऐ इब्ने आदम ! अगर तू जहन्नम से ऐसे डरता जैसे मोहताजी से डरता है तो मैं तुझे वहां से माल अता फ़रमाता जहां तेरा गुमान भी नहीं।

ऐ इब्ने आदम ! अगर तू जन्नत की रग़बत ऐसे रखता जैसे दुन्या की रग़बत थी तो मैं तुझे दोनों जहां में सआदत मन्द बना देता।

۞..... अगर तुम मेरा ज़िक्र ऐसे करते जैसे एक दूसरे का करते हो तो फ़रिश्ते सुब्हो शाम तुम पर सलामती भेजते।

۞..... अगर तुम मेरे बन्दों से ऐसी महब्बत करते जैसे दुन्या से करते हो तो मैं तुम्हें मुर-सलीन (عَلَيْهِمُ السَّلَام) का सा इन्आमो इक्राम अता फ़रमाता।

लिहाज़ा अपने दिलों को दुन्या की महब्बत से मत भरो क्यूं कि येह अन्क़रीब ज़वाल पज़ीर हो जाएगी।

۞۞۞۞۞۞۞

नसीहत नम्बर 32 : सब से बड़ी मौत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "**(ऐ इब्ने आदम !)** तेरा थोड़ी सी मुसीबत को बरदाश्त करना जहन्नम का अज़ाब बरदाश्त करने से कहीं ज़ियादा आसान है।

(अज़ाबे जहन्नम के बारे में इर्शाद होता है :)

www.dawateislami.net

اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿۶۵﴾ (پ۱۹، الفرقان:۶۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक उस का अ़ज़ाब गले का ग़ल (फन्दा) है।

(**ऐ इब्ने आदम !**) थोड़ी सी इबादत पर हमेशगी अपने पीछे ऐसी त़वील खुशी लाएगी जिस में दाइमी सुकून व ने'मतें होंगी।

ऐ इब्ने आदम ! इस से पहले कि मैं तेरा रिज़्क़ किसी और को खिला दूं, तुझ पर लाज़िम है कि इस बात का यक़ीन रख जिस का मैं ज़ामिन हूं। दुन्या को छोड़ दे, क़ब्ल इस के कि मैं तुझे छोड़ दूं। शुबुहात से छुटकारा पा ले, इस से पहले कि क़ियामत के दिन तेरी नेकियां ख़त्म हो जाएं। ज़िक्रे आख़िरत से अपने दिल को आबाद रख क्यूं कि क़ब्र के इलावा तेरा कोई और ठिकाना नहीं।

ऐ इब्ने आदम ! जो जन्नत का मुश्ताक़ हुवा उस ने स-दक़ातो ख़ैरात में जल्दी की। जो जहन्नम से डर गया वोह शर से बाज़ आ गया और जिस ने अपने नफ़्स को शह्वात से रोक लिया उस ने द-रजाते आ़लिया को पा लिया।

ऐ मूसा बिन इमरान[1] (عَلَيْهِ السَّلَام) **!** अगर बे वुज़ू होने की ह़ालत में तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो अपने आप को ही मलामत करना।

ऐ मूसा बिन इमरान (عَلَيْهِ السَّلَام) **!** नेकियों में मुफ़्लिसी

---

1 ..... मुफ़स्सिरे क़ुरआन, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : "इमरान दो हैं एक **इमरान बिन यस्हुर** बिन फ़ाहस बिन लावा बिन या'कूब येह तो ह़ज़रते मूसा व हारून (عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के वालिद हैं दूसरे **इमरान बिन मासान** येह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा के वालिद हैं दोनों इमरानों के दरमियान एक हज़ार आठ सो बरस का फ़र्क़ है।" (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 3, आले इमरान, तह़्तल आयह : 35)

www.dawateislami.net

(या'नी नेकियां न होना) सब से बड़ी मौत है।

ऐ मूसा बिन इमरान (عَلَيْهِ السَّلَام) ! जिस ने मश्वरा न किया वोह नादिम हुवा और जिस ने इस्तिख़ारा (या'नी मश्वरा) किया वोह शर्मिन्दा न हुवा।

नसीह़त नम्बर 33 : पड़ोसी के ह़क़ की रिआ़यत कर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "जिस ने अ़मल के ज़रीए़ शोहरत की ख़्वाहिश की, वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो अपनी पीठ पर पानी लाद कर पहाड़ की त़रफ़ मुन्तक़िल करता है कि उसे थकावट व मशक़्क़त आन लेती है। और उस के अ़मल से कुछ भी क़बूल नहीं किया जाता जिस त़रह़ पहाड़ पर जितना भी पानी डाला जाए वोह नर्म नहीं होता।

ऐ इब्ने आदम ! अच्छी त़रह़ जान ले ! मैं सिर्फ़ उसी अ़मल को क़बूल करता हूं जो ख़ालि-सतन मेरी रिज़ा की ख़ात़िर किया गया हो, पस मुख़्लिसीन के लिये ख़ुश ख़बरी है।

ऐ इब्ने आदम ! जब तू मोह़ताजी को (अपनी त़रफ़) आता देखे तो कहना : सालिह़ीन के शिआ़र को मरह़बा। जब मालो दौलत को आता देखे तो कहना : गुनाहों की सज़ा जल्द दे दी गई। जब तेरे पास मेहमान न आए तो कहना : اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ।

ऐ इब्ने आदम ! माल मेरा है जब कि तू मेरा बन्दा और मेहमान मेरा क़ासिद है। क्या तुझे इस बात का ख़ौफ़ नहीं कि कहीं मैं तुझ से अपनी ने'मत छीन न लूं ? रिज़्क़ का मालिक तो मैं हूं लेकिन शुक्र तेरे ज़िम्मे है और इस का फ़ाएदा तुझे ही होगा तो जो ने'मतें मैं ने तुझे दीं उन पर मेरा शुक्र अदा क्यूं नहीं करता ?

www.dawateislami.net

ऐ इब्ने आदम ! तुझ पर तीन चीज़ें वाजिब हैं : (1) माल की ज़कात (2) सिलए रेह्मी और (3) अपने अहलो इ़याल और मेहमानों को नेकी की दा'वत देना। लिहाज़ा जो चीज़ें मैं ने तुझ पर वाजिब की हैं अगर तूने उन में कोताही की तो मैं तुझे तमाम जहानों के लोगों के लिये इ़ब्रत बना दूंगा।

ऐ इब्ने आदम ! अगर तूने अपने पड़ोसी के ह़क़ की रिआ़यत ऐसे न की जैसे अपने अहलो इ़याल के ह़क़ की रिआ़यत करता है तो मैं न तो तेरी त़रफ़ नज़रे रह़मत करूंगा, न तेरा कोई अ़मल क़बूल करूंगा और न ही तेरी कोई दुआ़ पूरी करूंगा।

ऐ इब्ने आदम ! अपनी मिस्ल (मोह़ताज) मख़्लूक़ पर तवक्कुल न कर, वरना मैं तुझे उन्हीं के सिपुर्द कर दूंगा और मेरी मख़्लूक़ के सामने तकब्बुर न कर क्यूं कि तेरी इब्तिदा उस नुत़्फ़े (या'नी नापाक पानी) से हुई है जिसे मैं ने पेशाब के निकलने की जगह से निकाला है।

(चुनान्चे, क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :)

خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۙ﴿۶﴾ يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ؕ﴿۷﴾

(پ۳۰، الطارق: ۶-۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जस्त करते पानी से जो निकलता है पीठ और सीनों की बीच से।

(ऐ इब्ने आदम !) मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों की त़रफ़ मत देख क्यूं कि (क़ब्र में) कीड़े सब से पहले तेरी आंख खाएंगे। याद रख ! ह़राम पर नज़र और इस की मह़ब्बत पर तेरा मुह़ा-सबा किया जाएगा। और कल बरोज़े क़ियामत मेरे हुज़ूर खड़े होने को याद रख क्यूं कि मैं लम्ह़े भर के लिये भी तेरे राज़ों से ग़ाफ़िल नहीं होता, बेशक मैं दिलों की बात जानता हूं।"

www.dawateislami.net

नसीहत नम्बर 34 : अगर तेरे गुनाह ज़ाहिर हो गए तो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** मेरी इबादत कर क्यूं कि जो मेरी इबादत करता है मैं उस से महब्बत करता हूं और अपने बन्दों को उस का मुतीअ़ बना देता हूं। क्यूं कि तू नहीं जानता कि गुज़श्ता ज़िन्दगी में तूने मेरी कितनी ना फ़रमानी की और बक़िय्या ज़िन्दगी में कितनी ना फ़रमानी करेगा, लिहाज़ा मेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल न हो क्यूं कि मैं जो चाहता हूं करता हूं। मेरी इबादत कर क्यूं कि तू बन्दए आ़जिज़ और मैं रब्बे जलील हूं। अगर बनी आदम से तेरे दोस्त और अहले महब्बत तेरे गुनाहों की बू पा लें और तेरे उन कारनामों पर मुत्तलअ़ हो जाएं जिन्हें मैं जानता हूं तो तेरे साथ उठना बैठना छोड़ दें और येह हो भी सकता है क्यूं कि तेरे गुनाहों की बू रोज़ बरोज़ बढ़ती जा रही है, जब कि तेरी पैदाइश के दिन से हर रोज़ तेरी उ़म्र घटती जा रही है।

ऐ इब्ने आदम ! जिस शख़्स की कश्ती टूट जाए और वोह लकड़ी के तख़्ते पर सुवार हो कर लौटे और उसे समुन्दर में मौजें घेर लें, तो उस की येह मुसीबत तेरी इस (या'नी गुनाहों की) मुसीबत से बड़ी नहीं है, लिहाज़ा अपने गुनाहों का यक़ीन कर और नेकियों के मु-तअ़ल्लिक़ ख़त़रे में रह।

ऐ इब्ने आदम ! मैं तेरी त़रफ़ आ़फ़िय्यत की निगाह फ़रमाता और तेरे गुनाहों को छुपाता हूं ह़ालां कि मैं तुझ से मुस्तग़नी हूं जब कि तू मेरा मोह़ताज होने के बा वुजूद मेरी ना फ़रमानियों में मुब्तला है।

ऐ इब्ने आदम ! तू कब तक फ़ानी दुन्या को आबाद और बाक़ी रहने वाली आख़िरत को बरबाद करने की कोशिश में लगा रहेगा ?

www.dawateislami.net

ऐ इब्ने आदम ! मेरी मख़्लूक़ को धोका भी देता है और इन की नाराज़ी से डरता भी है।

ऐ इब्ने आदम ! अगर तमाम आस्मानों और ज़मीन वाले तेरे लिये मग़्फ़िरत की दुआ करें तो फिर भी तुझे अपने गुनाहों पर रोना चाहिये क्यूं कि तुझे नहीं मा'लूम कि तू किस ह़ाल में मुझ से मिलेगा।

ऐ मूसा बिन इमरान (عَلَيْهِ السَّلَام) **!** मैं जो कह रहा हूं उसे तवज्जोह से सुनो और मैं ह़क़ ही कहता हूं : मेरे बन्दों में से कोई बन्दा भी उस वक़्त तक (कामिल) ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक लोग उस के शर, ज़ुल्म, धोके, चुग़ली, सरकशी और ह़सद से बे ख़ौफ़ न हो जाएं।

ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) **!** (लोगों से) कह दो कि ह़क़ तुम्हारे रब की त़रफ़ से है तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे।''

(जैसा कि क़ुरआने पाक में इर्शादे बारी तआ़ला है :)

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۟ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۪

(پ۱۵،الکھف:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रमा दो कि ह़क़ तुम्हारे रब की त़रफ़ से है तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे।

नसीह़त नम्बर 35 : मसाकीन पर ख़र्च न करने का सबब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम !** बेशक तू दो ने'मतों के दरमियान सुब्ह़ करता है और तू नहीं जानता कि दोनों में से कौन सी बड़ी है। लोगों से तेरे गुनाहों का पोशीदा होना या फिर लोगों का तेरी ता'रीफ़ो तौसीफ़ करना और अगर

www.dawateislami.net

लोग तेरे उन आ'माल से वाक़िफ़ हो जाएं जिन्हें मैं जानता हूं तो वोह तुझे सलाम तक भी न करें। और इस से बढ़ कर ने'मत येह है कि तू आफ़िय्यत में है, तू लोगों से मुस्तग़नी है जब कि वोह तेरे मोहताज हैं और तुझ से लोगों की अज़िय्यत रोक दी गई है। लिहाज़ा मेरा शुक्र कर और मेरी ने'मतों की क़द्र पहचान, अपने अमल को रिया से पाक कर ले, ख़ौफ़ज़दा मुसाफ़िर के ज़ादेराह की मिस्ल ज़ादे राह ले ले और अपनी नेकी को मेरे अर्श के नीचे रख दे।

ऐ इब्ने आदम ! तुम्हारे सख़्त दिल, तुम्हारे आ'माल पर और तुम्हारे आ'माल, तुम्हारे जिस्मों पर और तुम्हारे जिस्म, तुम्हारी ज़बानों पर और तुम्हारी ज़बानें, तुम्हारी आंखों पर रोती है।

ऐ इब्ने आदम ! मेरे ख़ज़ाने कभी ख़त्म नहीं होंगे, तेरे ख़र्च करने की मिक़्दार के बराबर मैं तुझे अता फ़रमाता हूं और जिस क़दर तू (मेरी राह में) ख़र्च करने से रोकता है उतनी मिक़्दार मैं तुझ से रोक लेता हूं। और मेरे अता कर्दा रिज़्क़ में से तेरा मिस्कीनों पर ख़र्च न करना तेरे बुरे गुमान, मोहताजी के ख़ौफ़ और मुझ पर यक़ीन न होने का नतीजा है। क्यूं कि मैं ने तेरी ख़िल्क़त को रिज़्क़ के एहतिमाम के साथ लाज़िम कर दिया है, लिहाज़ा अगर तू रिज़्क़ का एहतिमाम करता है हालां कि वोह मेरा ही अता कर्दा है तो (इसे मेरी राह में) ख़र्च कर और मेरे दिये हुए रिज़्क़ में से मेरे बन्दों पर ख़र्च करने के मुआ-मले में बुख़्ल न कर क्यूं कि मैं तुझे इस का इवज़ अता करने का ज़ामिन हूं और इस के इवज़ में, मैं ने तुझे अज्रो सवाब अता करने का वा'दा किया है तो तू क्यूं मेरे लिखे हुए में शक करता है ? पस जिस ने न तो मेरे वा'दे पर यक़ीन किया और न ही मेरे अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) की तस्दीक़ की बेशक उस ने मेरी रबूबिय्यत का इन्कार किया और जिस ने मेरी

www.dawateislami.net

रबूबिय्यत का इन्कार किया मैं उसे औंधे मुंह जहन्नम में डालूंगा।

नसीहत नम्बर 36 : दुश्मने औलिया से ए'लाने जंग

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** मैं **अल्लाह** हूं, मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, लिहाज़ा मेरी इबादत करो, मेरा शुक्र अदा करो और ना शुक्री न करो।

ऐ इब्ने आदम ! जिस ने मेरे किसी वली से दुश्मनी की तह़क़ीक़ उस ने मेरे साथ ए'लाने जंग किया। जिस ने किसी ऐसे शख़्स पर ज़ुल्म किया जिस का मेरे सिवा कोई ह़ामी व मददगार न हो तो उस पर मेरा ग़ज़ब निहायत ही सख़्त है। जो मेरी तक़्सीम पर राज़ी हुवा मैं उस के रिज़्क़ में ब-र-कत डाल दूंगा और दुन्या उस के पास ज़लीलो ह़क़ीर हो कर आएगी अगर्चे वोह उस का इरादा न करे।"

नसीहत नम्बर 37 : तौबा में टाल मटोल नदामत लाती है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** अपने दिल पर ग़ौर करता रह कि जो अपने लिये पसन्द करता है वोही दूसरे के लिये पसन्द कर।

ऐ इब्ने आदम ! तेरा जिस्म कमज़ोर, ज़बान हलकी और दिल बे रह़म है।

ऐ इब्ने आदम ! तेरी इन्तिहा मौत है लिहाज़ा इस के आने से पहले पहले इस के लिये तय्यारी कर ले।

ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तेरे आ'ज़ा में से हर उ़ज़्व के साथ उस के ह़िस्से (या'नी आंख के लिये देखना और कान के लिये सुनना वग़ैरा) को भी पैदा कर दिया।

www.dawateislami.net

ऐ इब्ने आदम ! अगर मैं तुझे गूंगा पैदा करता तो तू कुव्वते गोयाई की ह़सरत करता, और अगर बहरा पैदा करता तो तू समाअ़त की ह़सरत करता। लिहाज़ा ख़ुद पर मेरी ने'मत की क़द्रो क़ीमत पहचान और मेरा शुक्र अदा कर, ना शुक्री न कर क्यूं कि (तुझे) मेरी त़रफ़ ही लौटना है।

ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तेरी क़िस्मत में जो कुछ लिख दिया है उस की त़लब में ख़ुद को (ज़रूरत से ज़ियादा) न थका। क्यूं कि जो कुछ तेरे नसीब में लिखा जा चुका है वोह तुझे मिल कर रहेगा यहां तक कि तू उसे पूरा पूरा ह़ासिल कर लेगा।

ऐ इब्ने आदम ! मेरे नाम की झूटी क़समें न खाना क्यूं कि जिस ने मेरे नाम की झूटी क़सम खाई मैं उसे जहन्नम में दाख़िल करूंगा।

ऐ इब्ने आदम ! जब तू मेरा ही अ़त़ा कर्दा रिज़्क़ खाता है तो फिर मेरी इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी भी कर।

ऐ इब्ने आदम ! मुझ से अगले दिन के रिज़्क़ का मुत़ा-लबा न कर क्यूं कि मैं तुझ से अगले दिन के अ़मल का मुत़ा-लबा नहीं करता।

ऐ इब्ने आदम ! अगर मैं अपने बन्दों में से किसी के लिये माले दुन्या का हुसूल रवा रखता तो अपने अम्बिया के लिये रखता ताकि वोह मेरे बन्दों को मेरी इत़ाअ़त और मेरा हुक्म क़ाइम करने की त़रफ़ बुलाते।

ऐ इब्ने आदम ! मौत के आने से पहले अपने लिये नेक अ़मल (का ज़ख़ीरा) कर ले और ख़त़ा तुझे हरगिज़ धोके में न डाले रखे क्यूं कि इस के फ़ौरन बा'द सफ़र है। ज़िन्दगी और लम्बी

www.dawateislami.net

उम्मीदें तुझे तौबा से ग़ाफ़िल न कर दें क्यूं कि तौबा में टाल मटोल करने पर तू उस वक़्त नादिम होगा जब नदामत तुझे कुछ फ़ाएदा न देगी।

ऐ इब्ने आदम ! अगर मेरे दिये हुए माल में से तूने मेरा ह़क़ अदा न किया और फ़ु-क़रा को उन का ह़क़ न दिया तो तुझ पर किसी बे रह़म को मुसल्लत़ कर दिया जाएगा जो इसे तुझ से छीन लेगा और मैं तुझे इस पर कुछ भी सवाब अ़त़ा नहीं करूंगा।

ऐ इब्ने आदम ! अगर तुझे मेरी रह़मत चाहिये तो ख़ुद पर मेरी इत़ाअ़त लाज़िम कर ले और अगर मेरे अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है तो मेरी ना फ़रमानी से बाज़ आ जा।

ऐ इब्ने आदम ! मैं तेरे थोड़े से अ़मल पर भी राज़ी हूं जब कि तू मेरे कसीर रिज़्क़ पर भी राज़ी नहीं।

ऐ इब्ने आदम ! जब तू माल ह़ासिल कर ले तो ह़िसाबो किताब को याद रखना।

۞..... और जब खाना खाने के लिये बैठे तो भूके को याद रखना।

۞..... जब तेरा नफ़्स तुझे कमज़ोर शख़्स पर क़ुदरत (ग़-लबा) पाने की दा'वत दे तो ख़ुद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत को याद कर लेना कि अगर वोह चाहे तो इसे ज़रूर (तुझ पर) मुसल्लत़ कर देगा।

۞..... जब तुझ पर कोई बला व आज़्माइश नाज़िल हो तो ''لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم'' से मदद त़लब करना।

۞..... जब बीमार हो जाए तो स-दक़ा व ख़ैरात से अपना इलाज करना।

www.dawateislami.net

۞..... और जब तुझे कोई मुसीबत पहुंचे तो "اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ लेना।"

नसीहत नम्बर 38 : क़ब्र का रफ़ीक़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **"ऐ इब्ने आदम !** नेकी कर क्यूं कि येह जन्नत की चाबी है और उसी की त़रफ़ रहनुमाई करेगी। बुराई से इज्तिनाब कर क्यूं कि येह जहन्नम की चाबी है और उसी की त़रफ़ ले जाएगी।

ऐ इब्ने आदम ! येह बात अच्छी त़रह़ जान ले ! कि ख़राबी पर तुझे तम्बीह (की जाती) है। बेशक तेरी उ़म्र ख़राब होने के लिये, जिस्म मिट्टी के लिये, जो कुछ तूने जम्अ़ किया है वोह वु-रसा के लिये और ऐ़शो आराम दूसरों के लिये है जब कि ह़िसाबो किताब तुझ पर लाज़िम और सज़ा व नदामत तेरे लिये है। और क़ब्र में तेरा रफ़ीक़ सिर्फ़ तेरा अ़मल ही है लिहाज़ा तू ख़ुद अपना मुह़ा-सबा कर क़ब्ल इस के कि तेरा मुह़ा-सबा किया जाए। मेरी इत़ाअ़त को लाज़िम कर ले, मेरी ना फ़रमानी से रुक जा और मेरी अ़त़ा पर राज़ी हो कर शुक्र गुज़ारों में से हो जा।

ऐ इब्ने आदम ! जिस ने हंस हंस कर गुनाह किये मैं उसे रुला रुला कर जहन्नम में डालूंगा और जो मेरे ख़ौफ़ से रोता रहा मैं उसे ख़ुश कर के जन्नत में दाख़िल करूंगा।

ऐ इब्ने आदम ! कितने ग़नी ऐसे हैं जो रोज़े ह़िसाब मोह़ताजी व मुफ़्लिसी की तमन्ना करेंगे।

۞..... कितने बे रह़्म ऐसे हैं जिन्हें मौत ज़लीलो रुस्वा कर देगी ?

۞..... कितनी शीरीं चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें मौत तल्ख़ कर देगी ?

www.dawateislami.net

۞..... ने'मतों पर कितनी ख़ुशियां ऐसी हैं कि जिन्हें मौत गदला कर देगी ?

۞..... कितनी ख़ुशियां ऐसी हैं जो अपने बा'द त़वील ग़म लाएंगी ?

ऐ इब्ने आदम ! मौत (की सख़्तियों) के मु-तअ़ल्लिक़ जो कुछ तुम जानते हो अगर चौपाए जान लें तो खाना पीना छोड़ दें ह़त्ता कि भूके प्यासे मर जाएं।

ऐ इब्ने आदम ! अगर मौत और इस की शिद्दत के इलावा कोई और सख़्ती तुम पर मुक़र्रर न की जाती तो भी दिन और रात के सुकून को तर्क कर देना तुझ पर लाज़िम है। और ऐसा क्यूंकर न हो जब कि इस के बा'द का मुआ़-मला इस से भी सख़्त तर है।

ऐ इब्ने आदम ! आख़िरत में मिलने वाली ने'मतों (के ह़ुसूल) की ख़ातिर मौत की ह़क़ीक़त को पेशे नज़र रख और जो नेकी न कर सके उस पर तुझे अफ़्सुर्दा होना चाहिये। दुन्या की जो ने'मतें तुझे मिलीं उन पर ख़ुश मत होना और जो न मिलीं उन पर अफ़्सोस मत करना।

ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, उसी की त़रफ़ लौटाऊंगा और उसी से दोबारा उठाऊंगा, लिहाज़ा दुन्या को अल वदाअ़ कह दे और मौत की तय्यारी में लग जा। और अच्छी त़रह़ जान ले ! कि जब मैं किसी बन्दे से मह़ब्बत करता हूं तो दुन्या को उस से दूर और उसे आख़िरत के कामों में मसरूफ़ कर के दुन्या के उ़यूब उस पर आश्कार कर देता हूं तो वोह उन से बच कर जन्नतियों वाले काम करने लगता है फिर (आख़िरत में) मैं उसे मह़ज़ अपनी रह़मत से दाख़िले जन्नत करूंगा। और जब मैं किसी

www.dawateislami.net

बन्दे को ना पसन्द करता हूं तो दुन्या के ज़रीए उसे, अपनी ज़ात से ग़ाफ़िल कर के दुन्या के कामों में मश्ग़ूल कर देता हूं तो वोह दोज़ख़ियों वाले कामों में लग जाता है फिर (आख़िरत में) मैं उसे जहन्नम में दाख़िल करूंगा। (اَلْعِیَاذُ بِاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ)

ऐ इब्ने आदम ! हर उ़म्र फ़ानी है अगर्चे त़वील हो, और दुन्या तो सायादार चीज़ के साए की मानिन्द है जो थोड़ी देर ठहर कर चला जाता और फिर तेरे पास दोबारा लौट कर नहीं आता।

ऐ इब्ने आदम ! मैं ने ही तुझे पैदा किया, मैं ही तुझे रिज़्क़ देता हूं, मैं ने ही तुझे ज़िन्दगी अ़त़ा की, मैं ही तुझे मौत दूंगा, मैं ही तुझे दौबारा उठाऊंगा और मैं ही तेरा मुह़ा-सबा करूंगा पस अगर तूने कोई बुराई की तो उसे देखेगा बा वुजूद येह कि तू अपनी जान के नफ़्अ़ व नुक़्सान, मौत व ह़यात और मरने के बा'द उठने का मालिक भी नहीं।

ऐ इब्ने आदम ! मेरी इत़ाअ़त व इबादत में लग जा और रिज़्क़ की फ़िक्र न कर क्यूं कि रिज़्क़ के मुआ़-मले में मैं तुझे किफ़ायत करूंगा और किसी ऐसी चीज़ का ग़म न कर जिस की तुझे ह़ाजत नहीं।

ऐ इब्ने आदम ! जैसे तू अ़मल किये बिग़ैर उस का सवाब नहीं पा सकता ऐसे ही उस चीज़ की तमन्ना क्यूं करता है जो तेरी त़ाक़त व क़ुदरत में नहीं ?

ऐ इब्ने आदम ! जिस का रास्ता मौत हो वोह दुन्या पर कैसे ख़ुश हो सकता है ? और जिस का घर क़ब्र हो वोह दुन्या में अपने घर के अन्दर कैसे ख़ुश रह सकता है ?

ऐ इब्ने आदम ! थोड़े रिज़्क़ पर तेरा शुक्र गुज़ार होना, कसीर रिज़्क़ पर ना शुक्रा होने से कहीं ज़ियादा बेहतर है।

www.dawateislami.net

ऐ इब्ने आदम ! तेरा बेहतरीन माल वोह है जो तू (स-दक़ा कर के) आगे भेज चुका और बद तरीन माल वोह है जो तूने दुन्या में छोड़ा, लिहाज़ा मौत आने से पहले (अपनी नजात के लिये) कुछ भलाई आगे भेज दे, इसे तू मेरे पास पा लेगा।

ऐ इब्ने आदम ! ग़मज़दा के ग़म को मैं ही दूर करता हूं, मग़्फ़िरत के त़ालिब की बख़्शिश मैं ही करता हूं, तौबा करने वाले को गुनाहों से मैं ही रोकता हूं, लिबास से महरूम को मैं ही कपड़े पहनाता हूं, ख़ौफ़ज़दा के ख़ौफ़ को मैं ही दूर करता हूं, भूके का पेट मैं ही भरता हूं। जब मेरा बन्दा मेरी इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करता और मेरे हुक्म पर राज़ी रहता है तो मैं उस का मुआ़-मला आसान, उस की पीठ मज़्बूत़ और उस का सीना कुशादा फ़रमा देता हूं।"

ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) **!** जो फ़क़ीरों और यतीमों के माल के ज़रीए़ (या'नी छीन कर) मालदार बनेगा, मैं उसे दुन्या में मोह़ताज और आख़िरत में गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब करूंगा। और जिस ने फ़ु-क़रा और कमज़ोरों पर ज़ुल्म व ज़ियादती की मैं उसे तबाह बरबाद कर दूंगा और उसे जहन्नम में दाख़िल करूंगा।"

(इर्शादे बारी तआ़ला है :)

اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰىۙ(۱۸) صُحُفِ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰى(۱۹)

(پ۳۰،الاعلی:۱۸-۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक येह अगले सह़ीफ़ों में है इब्राहीम और मूसा के सह़ीफ़ों में।

तम्मत बिलख़ैर

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुम्आ़रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शह़र में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 9326310099
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08362244860

ISBN 978-969-579-836-2
0109344

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

www.dawateislami.net